चण्डीगढ़ के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का अध्ययन

डॉ० कुसुम, सहायक प्रो० हिन्दी,
राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, सेक्टर-२०डी, चण्डीगढ़
Email ID: kusumhindi06@gmail.com

सारांश:-

मनुष्य का जीवन उस पुष्प के समान है जो अपनी प्रस्फुटित सुगन्ध से सम्पूर्ण वातावरण को सुगन्धमय कर रहा है। इस सुगन्ध का हरण कोई बाहरी तत्व कर ले तब वह अपने वास्तविक रूप से परिवर्तित हो जाता है। ठीक वैसे ही जैसे एक स्वस्थ व्यक्ति के जीवन पर विषाणु अपना आधिपत्य जमा ले। वह अपने जीवन को सुरक्षित व संरक्षित रख सके इसके लिए उसे स्वयं जागरूक रहना होगा अन्यथा वह अपने पल्वित, पुष्पित, फलित जीवन को रोगाणु युक्त करके उसके ह्रास की ओर अग्रसारित होना प्रारम्भ हो जायेगा। मेरा इस शोध पत्र के माध्यम से जनमानस को जागरूक करना मुख्य उद्देश्य है। निष्कर्ष के तथ्यानुसार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नही है जबकि छात्रों और छात्राओं में सार्थक अन्तर है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं तथा कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा इसके भागों में कहीं सार्थक अन्तर है कहीं सार्थक अन्तर नही है।

पूर्वाख्यान:-

एड्स एक ऐसी बीमारी है जोकि कैंसर से भी अधिक घातक है। यह मानव के हंसते खेलते जीवन को कुछ क्षणों की लापरवाही के कारण ही काल के गाल में खींचकर ले जाती है। एड्स एक बड़े नाम का छोटा स्वरूप है। इसका पूरा नाम है- " एक्वायर्ड इम्यूनों डिफिशिएन्सी सिंड्रोम" इसका अभिप्राय होता है, मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को क्षीण करना। जिससे वह किसी भी रूग्णता से लड़ने की अपनी शक्ति को खो देता है। क्षमताओं के अभाव में वह रोग का सामना करने की अपनी शक्ति को खो देता है। शक्ति के अभाव में वह तन और मन दोनों स्तरों से ही अपने को हीन अनुभव करता है। उसका

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

शारीरिक और मानसिक सन्तुलन असन्तुलित हो जाता है। इसके विषाणु धीरे-धीरे मानव शरीर पर परोक्ष रूप से आक्रमण करके घुन की तरह उसे किस्तों में अविराम क्षति पहुँचाते हैं। काफी समय तक तो इसके आक्रमण का पता ही नहीं चलता। जब पता चलता है। तब तक पर्याप्त विलम्ब हो गया होता है। बस सावधानी ही एक मात्र बचाव है। अन्यथा कुछ क्षणों की असावधानी जीवन भर की परेशानी बन जाती है।

सन् 1885 में सुई पाश्चर नामक वैज्ञानिक ने अपने शोध के निष्कर्षों के द्वारा इस बीमारी के विषाणुओं का पता लगाया। ये विषाणु संक्रमण के द्वारा एक व्यक्ति के रक्त से दूसरे व्यक्ति के रक्त में प्रवेश कर जाते हैं। ये किसी एक स्त्री या पुरूष द्वारा अनेक स्त्रियों अथवा पुरूषों को अपना शिकार बना सकते हैं। ये रक्त में प्रवेश कर उसकी श्वेत कणिकाओं को समाप्त कर देते हैं। ये प्रभाव त्वरित स्थूल गति से नहीं होता। परोक्ष आक्रमण का प्रत्यक्ष प्रभाव जब प्रकाश में आता है। तब इसके विषय में अनेक परीक्षणों के पश्चात् वस्तुस्थिति का पता चलता है। यह संक्रमण निम्नलिखित कारणों से विस्तार पाता है:-

1. प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक यौंन सम्बन्धों के संक्रमित व्यक्ति के साथ अधिक मात्रा में प्रचलन में आने के कारण,

2. संक्रमित व्यक्ति के इंजेक्शन को असंक्रमित व्यक्ति को लगा देने के कारण,

3. संक्रमित व्यक्ति के रक्त को रक्त बैंक में जमा कर असंक्रमित व्यक्ति को चढ़ा देने के कारण,

4. संक्रमित व्यक्ति के रक्त से बने उत्पादों को असंक्रमित व्यक्ति द्वारा प्रयोग मे लाए जाने के कारण,

5. संक्रमित माताओं द्वारा उनकी सन्तानों में वंशानुगत रूप से रक्त में जाने के कारण,

6. अन्य कारणों के द्वारा

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

एड्स की निम्नांकित चार अवस्थाएं हैं:-

1. संक्रमित व्तक्ति से प्राप्त ये विषाणु अचानक या यकायक किसी असंक्रमित व्यक्ति पर हमला नहीं करते। वे बड़ी धीमी गति से उसके रक्त में पहुँच कर अपने विस्तार के परिवेश का निर्माण करते हैं। एक लम्बी अवधि तक तो संक्रमित व्यक्ति इनसे अन्जान रहता है। ये 'स्लोपोइजन' के रूप में रक्त कोशिकाओं को क्षीण करते हैं। पर्याप्त समय के पश्चात् जब ये अपना आधिपत्य जमा लेते हैं। तब वस्तुस्थिति का बोध होता है। ये विलम्ब ही अत्याधिक घातक सिद्ध होता है।

2. प्रतिरोधक शक्ति के क्षीण होने से रोग रात-दिन अपना विस्तार करता है। एंटीवाटीज के विस्तार के कारण संक्रमित होने के पश्चात भी काफी समय तक उसके लक्षण स्पष्ट रूप से परिलक्षित नहीं हो पाते हैं । इस कारण परीक्षण के पश्चात भी यथाशीघ्र उपचार में विलम्ब होता है।

3. जब एड्स के स्पष्ट लक्षण प्रकट होते हैं। उस समय तक काफी देर हो गयी होती है। लसिका ग्रंथियों में सूजन आने से मनुष्य को अविराम ज्वर रहने लगता है। पाचन प्रक्रिया अस्त-व्यस्त होने से दस्त आने लगते हैं।

4. दस्त, बुखार और पाचन तन्त्र के डांवाडोल होने के कारण नवीन रक्त का निर्माण होना स्थगित हो जाता है। जो उपलब्ध रक्त शरीर में है वह संक्रमित होने के कारण अपनी शक्ति खो चुका होता है। इस प्रकार मानव शरीर एक सूखे वृक्ष की भांति दिन-प्रतिदिन ह्रास की ओर जाने लगता है। शरीर के शक्तिहीन होने की स्थिति में टी०बी, कैंसर, त्वचा की अनेकानेक अवसरवादी रूग्णताएं शरीर को अपने चंगुल में फांस लेती हैं। इससे शारीरिक विकास समाप्त होकर विनाश और विकार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

यह जानने के लिए कि अमुख व्यक्ति एड्स के विषाणुओं से संक्रमित है अथवा नहीं। उसके एलिसा, वैस्टर्न व्लाट और करपास इत्यादि परीक्षण किए जाते हैं। परीक्षणों के उपरान्त

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

यदि स्थिति सकारात्मक पायी जाती है। तब अविलम्ब प्रभावी कदम उठाने हेतु उसकी चिकित्सा को निम्नांकित भागों में बांटकर अग्रिम आवश्यक उपचार किया जाता है:-

1. दवाईयों द्वारा अथवा कीमोथेरेपी द्वारा उपचार

2. इन्टर फेरान चिकित्सा विधि द्वारा उपचार

3. विशेष प्रतिरोधात्मक पद्धति द्वारा उपचार

4. अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण विधि द्वारा उपचार

5. उपचार की अन्य विधियों द्वारा

यह तथ्य अब रहस्य नहीं है कि एड्स का प्रभाव शनै-शनै रंक्त कणिकाओं की शक्ति को क्षीण करता है। जो रूग्णाओं के विषाणुओं का मुकावला करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इस कारण मानव शरीर धीरे-धीरे दुर्बल होता जाता है। इसका संक्रमण रात-दिन बढ़ता ही जाता है। अपना अत्यन्त भयानक स्वरूप प्रदर्शित करने लगता है। लम्बे समय तक इसके लक्षणों का ठीक-ठीक ज्ञान न होने की स्थिति में इसका व्यापक प्रभाव शरीर को अपने काबू में ले चुका होता है। सुरक्षा ही बचाव है सचेत होना ही उपचार है। सावधानी ही सबसे बड़ी दवा है। इन तमाम वाक्यों की पूरी निष्ठा से स्वीकार कर व्यवहार में लाने आवश्यक हो जाते हैं। इनकी उपेक्षा और अनदेखा किया जाना घातक रूप धारण कर लेता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा उपलब्ध कराए आंकड़ों के अनुसार 15 जनवरी सन् 1986 तक मात्र 51 देशों में 20088 व्यक्ति इस कुटिल रूग्णता से प्रभावित हो चुके थे। इसके पश्चात् सन् 1990 तक विश्व के 150 देश इस संक्रमण से संक्रमित हो चुके थे। अनेक स्वास्थ्य संगठनों के सक्रिय क्रियाशील रहते हुए भी यह समस्त विश्व के अनेकानेक देशों को अपने चंगुल में फांस रहा है। सरकारें अपने स्तर से अनेकानेक प्रभावी उपाय जन जागरण, संचार माध्यम, सिनेमा, दृश्य, श्रव्य, प्रचार, प्रसार इत्यादि अनेक माध्यमों के माध्यम से जन सामान्य को जागरूक और सचेत कर रही हैं। फिर भी इसकी व्यापकता में न्यूनता नहीं आ

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

पा रही है। विभिन्न स्वास्थ्यवर्धक संगठन रात-दिन इस दिशा में जी जान से यथा सम्भव प्रयास कर रहे हैं। यह कब इस संसार का पीछा छोड़ती है। इसकी अवधि अभी तक किसी भी संगठन ने निश्चित नहीं की है। अभी यह सुनना शेष है कि अमुख तिथि तक यह संसार को छोड़ देगी।

समस्या अभिकथन:-

चण्डीगढ़ के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का अध्ययन

अध्ययन की आवश्यकता:-

यह इस सत्यता को सभी स्वीकार करते हैं कि वैश्वीकरण के कारण समस्त देशों की दूरी कम हुई है और उनमें समीपता आयी है। यह समीपता कई प्रकार की समस्याओं की जन्मदात्री भी है। जिसमें एक भयानक समस्या है एड्स। यह कब, कहां, किस रूप में किस तक पहुँच जायेगी इस से स्वयं मनुष्य भी अनभिज्ञ रहता है और जब वह इस समस्या के घेरे में आ जाता है अर्थात वह एडंस के विषाणु से ग्रसित हो जाता है तब उसे पर्याप्त अवधि के पश्चात ज्ञात होता है और जिससे वह अत्याधिक भयभीत होता है। मनुष्य के इस एड्स के भय को ज्ञान और जागरूकता से कम किया जा सकता है। कि वह वातावरण और परिवेश से जागरूक रहे और इस के संक्रमण का उसके जीवन पर क्या प्रभाव होगा इसका प्राणी मात्र को ज्ञान हो तब वह अपने साथ-साथ समाज का भी वचाब कर सकता है। इसलिए इस अध्ययन की आवश्यकता है कि जन-सामान्य में जागृति लायी जाये और इसके वचाब के लिये इससे सम्बन्धित जानकारियों का प्रचार-प्रसार किया जाये जिससे सभी जागरूक हों कि किस कार्य के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं। जीवन का क्षय करने वाले इस विषाणु से बचने का एक मात्र स्रोत ज्ञान और जागरूकता है इसलिये कहा गया है कि वचाब ही सुरक्षा है। स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। जिससे वह एक नये समाज का सृजन करने में समर्थ हो सके।

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें:-

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।

2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में कोई अन्तर नही है।

3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का परिसीमांकन:-

न्यादर्श का चयन प्रस्तुत शोध कार्य के लिए राजकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक स्कूल, सेक्टर-27 और राजकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक स्कूल, सेक्टर-44 के ग्यारवी कक्षा के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

न्यादर्श विवरण:-

तालिका संख्या -1

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

क्रम संख्या	न्यादर्श वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या	कुल योग
1. 2.	राजकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक स्कूल, सेक्टर-27 राजकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक स्कूल, सेक्टर-44	150 110	260

प्रयुक्त उपकरण:-

शोध अध्ययन के लिए एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का परीक्षण हेतु अनुप कुमार, सहायक प्रोफेसर, अभिलाषी पी.जी शिक्षा महाविद्यालय, हिमाचल प्रदेश द्वारा निर्मित और प्रमाणीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक 50 वाक्यांश हैं जिन्हें पाँच भागों में विभक्त किया गया है:- 1. एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, 2. एच आई वी के प्रकार, 3. एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, 4. एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी, 5. चिकित्सा और सावधानी के उपाय। जिनके उत्तर हाँ, सहमत और नही तीन श्रेणियों में विभक्त हैं जिसमें नकारात्मक वाक्यांश के हाँ को शून्य, सहमत को एक और नही को दो से अकित किया गया है। वही सकारात्मक वाक्यांश के हाँ को दो, सहमत को एक और नही को शून्य से मूल्यांकित किया गया है।

अध्ययन विधि:-

वर्तमान शोध अध्ययन में विवर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :-

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों के चित्रण, विश्लेषण और विवेचन के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण और व्याख्या:-

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

तालिका संख्या -2

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	ग्रामीण क्षेत्र		शहरी क्षेत्र		टी मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	60.05	12.404	68.54	8.340	6.459	सार्थक अन्तर है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	12.57	4.525	14.77	2.833	4.748	सार्थक अन्तर है
2.एच आई वी के प्रकार	12.27	3.737	13.84	3.217	3.451	सार्थक अन्तर है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें,	9.80	2.295	10.25	2.265	1.471	सार्थक अन्तर नही है
4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	12.24	4.291	14.46	3.462	4.408	सार्थक अन्तर है
5.चिकित्सा और सावधानी के उपाय	13.18	3.826	15.23	3.346	4.344	सार्थक अन्तर है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक. एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, दो. एच आई वी के प्रकार, चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी, पाँच.चिकित्सा और सावधानी के उपाय में दोनो क्षेत्रों के विद्यार्थियों में .01 स्तर पर

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

सार्थक अन्तर है। जबकि भाग तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और उस से सम्बन्धित भागों की जानकारी अधिक है तथा दोनो के मध्य सार्थक अन्तर है। लेकिन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं की जानकारी और जागरण में कमी है। अतः प्रथम परिकल्पना " उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।" अस्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या -3

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	कला वर्ग		विज्ञान वर्ग		टी मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	66.13	10.997	65.74	9.795	.296	सार्थक अन्तर नही है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	13.88	3.749	14.40	3.313	1.160	सार्थक अन्तर नही है
2.एच आई वी के प्रकार	13.31	3.668	13.43	3.152	.262	सार्थक अन्तर नही है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने	10.27	2.091	9.90	2.509	1.283	सार्थक अन्तर

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

वाले सरकारी प्रावधान/ सुविधायें,						नही है
4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	13.75	3.724	13.83	4.061	.152	सार्थक अन्तर नही है
5.चिकित्सा और सावधानी के उपाय	14.91	3.715	14.18	3.451	1.616	सार्थक अन्तर नही है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, दो एच आई वी के प्रकार, तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी, पाँच.चिकित्सा और सावधानी के उपाय में दोनो वर्गों के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और उस से सम्बन्धित भागों की समानान्तर जानकारी है। अतः द्वितीय परिकल्पना "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में कोई अन्तर नही है।" स्वीकृत की जाती है तथा दोनो के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या -4

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	**छात्रों**		**छात्राओं**		**टी मान**	**सार्थकता स्तर**
	मध्यमान	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**		

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	68.96	8.569	62.24	11.455	5.406	सार्थक अन्तर है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	14.98	3.251	13.01	3.668	4.588	सार्थक अन्तर है
2.एच आई वी के प्रकार	14.04	3.363	12.52	3.389	3.620	सार्थक अन्तर है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान / सुविधायें,	10.52	2.314	9.60	2.138	3.286	सार्थक अन्तर है
4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	14.44	3.596	12.97	4.040	3.086	सार्थक अन्तर है
5.चिकित्सा और सावधानी के उपाय	14.98	2.967	14.14	4.257	1.873	सार्थक अन्तर नही है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों को एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता अधिक है तथा छात्रों की तुलना में छात्राओं की कम है।अतः सार्थक अन्तर है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, दो एच आई वी के प्रकार, तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी में भी छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों और छात्राओं की एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर है। जबकि भाग पाँच चिकित्सा और सावधानी के उपाय में छात्रों और छात्राओं में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्राओं को छात्रों की अपेक्षा चिकित्सा और सावधानी के उपायों की अधिक जानकारी है। अतः तृतीय परिकल्पना "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

छात्राओं में एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में कोई अन्तर नही है।" अस्वीकृत की जाती है केवल भाग पाँच के अतिरिक्त दोनो के मध्य सार्थक अन्तर है।

तालिका संख्या -5

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों और छात्राओं का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	ग्रामीण छात्रों		ग्रामीण छात्राओं		टी मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	66.15	8.765	51.09	11.574	6.575	सार्थक अन्तर है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	14.43	4.138	9.84	3.638	5.069	सार्थक अन्तर है
2.एच आई वी के प्रकार	13.87	3.261	9.91	3.115	5.403	सार्थक अन्तर है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/ सुविधायें,	10.00	1.934	9.50	2.747	.950	सार्थक अन्तर नही है
4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	13.19	3.899	10.84	4.516	2.463	सार्थक अन्तर है
5.चिकित्सा और सावधानी के उपाय	14.66	2.598	11.00	4.311	4.706	सार्थक अन्तर है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में छात्रों की एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता अधिक है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, दो एच आई वी

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

के प्रकार, चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी, पाँच.चिकित्सा और सावधानी के उपाय में छात्रों और छात्राओं में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। जबकि भाग तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में छात्रों को एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और उस से सम्बन्धित भागों की जानकारी अधिक है तथा दोनो के मध्य सार्थक अन्तर है। लेकिन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं की जानकारी और जागरण में कमी है। अतः इसमें सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या -6

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के छात्रों और छात्राओं का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	**शहरी छात्रों**		**शहरी छात्राओं**		**टी मान**	**सार्थकता स्तर**
	मध्यमान	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**		
एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	70.32	8.175	66.49	8.100	3.158	सार्थक अन्तर है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	15.25	2.704	14.21	2.892	2.482	सार्थक अन्तर है
2.एच आई वी के प्रकार	14.12	3.426	13.51	2.943	1.278	सार्थक अन्तर नही है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/ सुविधायें	10.77	2.447	9.64	1.873	3.447	सार्थक अन्तर है

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	15.04	3.294	13.79	3.547	2.468	सार्थक अन्तर है
5.चिकित्सा और सावधानी के उपाय	15.13	3.131	15.33	3.595	.399	सार्थक अन्तर नही है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में छात्रों की एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता अधिक है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी में छात्रों और छात्राओं में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। जबकि भाग दो एच आई वी के प्रकार, पाँच.चिकित्सा और सावधानी के उपाय में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में छात्रों को एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और उस से सम्बन्धित भागों की जानकारी अधिक है तथा दोनो के मध्य सार्थक अन्तर है। लेकिन एच आई वी के प्रकार और चिकित्सा और सावधानी के उपायों की जानकारी और जागरण में कमी है। अतः इसमें सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या -7

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	**ग्रामीणीय कला वर्ग**		**ग्रामीणीय विज्ञान वर्ग**		**टी मान**	**सार्थकता स्तर**
	मध्यमान	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**		

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	58.54	12.903	62.15	11.538	1.280	सार्थक अन्तर नही है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	11.85	4.590	13.58	4.301	1.694	सार्थक अन्तर नही है
2.एच आई वी के प्रकार	11.72	4.064	13.03	3.127	1.554	सार्थक अन्तर नही है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/ सुविधायें,	9.83	1.596	9.76	3.042	.130	सार्थक अन्तर नही है
4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	12.02	3.762	12.55	4.982	.532	सार्थक अन्तर नही है
5.चिकित्सा और सावधानी के उपाय	13.13	4.124	13.24	3.428	.128	सार्थक अन्तर नही है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों ग्रामीण क्षेत्र के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, दो एच आई वी के प्रकार, तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी, पाँच.चिकित्सा और सावधानी के उपाय में दोनो वर्गों के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को एच

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और उस से सम्बन्धित भागों की समानान्तर जानकारी है। अतः दोनो के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या -8

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन, टी मान और सार्थकता स्तर

न्यादर्श	शहरीय कला वर्ग		शहरीय विज्ञान वर्ग		टी मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता	69.48	8.074	67.27	8.577	1.771	सार्थक अन्तर नही है
1.एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी	14.78	2.909	14.75	2.744	.060	सार्थक अन्तर नही है
2.एच आई वी के प्रकार	14.02	3.256	13.60	3.168	.872	सार्थक अन्तर नही है
3.एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें,	10.46	2.255	9.96	2.262	1.474	सार्थक अन्तर नही है
4.एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी	14.52	3.456	14.38	3.491	.273	सार्थक अन्तर नही है
5.चिकित्सा और सावधानी के	15.70	3.238	14.58	3.404	2.246	सार्थक

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

उपाय						अन्तर नही है

तालिका से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों शहरी क्षेत्र के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है। एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के भाग एक एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, दो एच आई वी के प्रकार, तीन एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, चार एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी, पाँच.चिकित्सा और सावधानी के उपाय में दोनो वर्गों के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नही है। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और उस से सम्बन्धित भागों की समानान्तर जानकारी है। अतः दोनो के मध्य सार्थक अन्तर नही है।

निष्कर्ष:-

शोध की प्रक्रिया के दौरान प्रदत्तों के संकलन, प्रदत्तों के विश्लेषण और परिकल्पनाओं के सत्यापन और परिणामों के स्पष्टीकरण के पश्चात शोधक के द्वारा निम्नलिखित निष्कर्षों को निःसृत किया गया:-

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के एच आई वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता और इसके भागों एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी के प्रकार, एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी एवं चिकित्सा और सावधानी के उपाय में असमानता है। जबकि इसके एक भाग एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं में समानता है।

2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा उसके .एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी के प्रकार, एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

प्रावधान/सुविधायें, एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी तथा चिकित्सा और सावधानी के उपाय भागों में समानता है।

3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं के एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा उसके एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी के प्रकार, एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं एवं एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी भागों में असमानता है। जबकि इसके एक भाग चिकित्सा और सावधानी के उपाय में समानता है।

4. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों और छात्राओं के एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा उसके भागों एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी के प्रकार, एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी एवं चिकित्सा और सावधानी के उपाय भागों में असमानता है। जबकि इसके एक भाग एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं में समानता है।

5. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के छात्रों और छात्राओं के एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा उसके भागों एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी एवं एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधाओं में असमानता है। जबकि इसके भागों एच आई वी के प्रकार, चिकित्सा और सावधानी के उपाय में समानता है।

6. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा उसके एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी के प्रकार, एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी तथा चिकित्सा और सावधानी के उपाय भागों में समानता है।

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

7. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता तथा उसके एच आई वी/एड्स की मूलभूत जानकारी, एच आई वी के प्रकार, एच आई वी/एड्स जागरूकता के लिए दिए जाने वाले सरकारी प्रावधान/सुविधायें, एच आई वी/एड्स से सम्बन्धित दुष्प्रचार की जानकारी तथा चिकित्सा और सावधानी के उपाय भागों में समानता है।

सुझाव:-

1. एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता के प्रति विद्यार्थियों में जागृति लायी जानी चाहिए।

2. एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता में वृद्धि करने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

3.एच०आई०वी/एड्स ज्ञान और जागरूकता को अग्रसारित करने के लिए प्रत्येक विषय के विद्यार्थियों को इसके कार्यक्रमों से जोड़ना चाहिए।

4. मनुष्य का जीवन अमूल्य है इसकी सुरक्षा के लिए चिकित्सा और सावधानी के उपाय को जन मानस को बताया जाना चाहिए।

5. मनुष्यों को एच आई वी/एड्स से सन्दर्भित भ्रमित दुष्प्रचार को दूर करने के लिए जानकारियों से युक्त कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

6. जनमानस को एच आई वी/एड्स से बचाव के लिए सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी जन सामान्य तक पहुँचायी जानी चाहिए।

7. एच आई वी/एड्स के लक्षणों व विभिन्न प्रकारों से जनमानस को अवगत कराया जाना चाहिए।

बालक के बाल मन पर प्रारम्भ मे जो प्रभाव पड़ता है वह उसके जीवन को आकार देने में सहयोग करता है। अतः एच आई वी/एड्स से उसे बचाने के लिए इसे शिक्षा के साथ

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**

जोड़ा जाना चाहिए और इससे सम्बन्धित समस्त संगठनों, संस्थाओं और अभिभावकों को खुले मन से बात करनी चाहिए तथा सहयोग के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

सन्दर्भ सूची:-

1. स्वर्णकार, डॉ०प्रेमचन्द, (1991) महारोग एड्स, , प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. पाठक, पी०डी०, (1982), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. भार्गव, महेश, (2006) आधुनिक मनौवैज्ञानिक परीक्षण मापन, आगरा व एच०पी० भार्गव बुक डिपो
4. नाको मेनअल कन्ट्रोल ऑफ हॉस्पिटल ऐसोसिऐटिड इनफैक्सन।
5. ग्राम संदेश (राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण संगठन 2007)।
6. परार्मशदाताओं के लिए एच आई वी/एड्स कार्य पुस्तिका।
7. कृतिका जनवरी-दिसम्बर 2012, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
8. कुरूक्षेत्र माह दिसम्बर 2004, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
9. शैक्षिक कार्यक्रमों, एक्सटेंशन एक्टीविटीज और शोध के जरिए समाज के एचआईवी
10. सीबीसीआई-इग्नू पीठ - परिचय (hindi.ignou.ac.in)
11. ज्ञानकोश विकिपीडिया
12. www.aidsmap.com
13. www.aids.org
14. www.aids.gov.

© 2014 Vidya Publications. **Authors are responsible for any plagiarism issues.**